पेड़-परिन्दों, नदी-पहाड़ों की चित्रकार - शोभा घारे

बचपन को याद करती हूँ तो माँ याद आती है। मेरी माँ बड़ी तैराक थी। वह रेत में घर बनाती उसे सीपियों से सजाती। माँ के पाले पशु-पक्षियों से भरा हमारा घर याद आता है। कौओं, पक्षियों पशुओं से वह आज पिछत्तर की उमर भी वैसे ही बातें करती है। बिल्कुल बच्ची है। कभी मीलों फैले सुपारी व नारियल के बागान याद आते हैं। उसे कोई जीव घायल दिखता तो उसकी मरहम पट्टी करती। आज हाल यह है कि मोहल्ले भर के जानवर जख्मी होते ही हमारे घर के सामने खड़े हो जाते हैं। आसपास के सब ज़ुबाँ-बेज़ुबा घर परिवार के लगते हैं। न मैंने उन्हें अलग से पहचाना, न वे मुझे अलग से जानते हैं। ***शोभा घारे***